**Original Article**
ISSN(Online): 3139-6763
https://shikshasamvad.com/

Shiksha Samvad
International Open Access, Peer Reviewed & Refereed Journal
© Shiksha Samvad|Volume-04| Issue-01| September- 2026
DOI: - https://doi.org/10.64880/shikshasamvad.v4i1.14

# सूफी संगीत

## डॉ शालिनी वर्मा

असिस्टेंट प्रोफेसर संगीत गायन, शहीद मंगल पांडे राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मेरठ।
Email: shalinisid14@gmail.com

***सारांश:***

*सूफ़ी संगीत विरासत हमारे हृदय की गहराइयों से जुड़ा हुआ है। सूफियों ने ईश्वर से सीधा संवाद बनाने के लिए संगीत और नृत्य का प्रयोग किया। संत निजामुद्दीन औलिया, अमीर खुसरो, संत बुल्ले शाह, शेख फरीद महान सूफी संत हुए हैं। सूफियाना संगीत विचारधारा की एक सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उसका आधार सामंजस्य पर टिका है। प्रेम की ताकत से निराकार ईश्वर को प्राप्त करने की उनके अभिलाषा रही है। भारतीय उपमहाद्वीप में सूफी संगीत की अनूठी विशेषता कव्वाली , कल्बाना, नक्श निगार, रंग ,बसीत, सावन के गीत, धमाल, मंडहा, काफी गायन शैली, मर्सिया आदि गायन शैली के द्वारा प्रस्तुत की गई है।*

***मुख्य शब्द:-*** *सूफ़ी संगीत, कव्वाली, कल्बाना, बाबा शेख फरीद, मर्सिया।*

भारतीय संस्कृति में संगीत को पवित्रम् मानकर धर्मबद्ध करते हुए मोक्ष प्राप्ति का एक उत्तम साधन माना गया है। भारत में इस्लाम के प्रवेश के साथ ही सूफी धारा का आगमन हुआ जिसका रूप यहाँ पूर्व विद्यमान निर्गुण भक्ति के लगभग समान ही था। सूफी विचारधारा इस्लाम का ही नवीन संस्करण है जिसमें अपेक्षाकृत अधिक उदारता है। आध्यात्म, प्रेम तथा सौहार्द इस धारा की विशेषता रही है। सूफ़ी संगीत विरासत हमारे हृदय की गहराइयों से जुड़ा हुआ है। इस्लाम से एक समूह सूफी, धर्म को, ईश्वर के प्रति प्रेम के रूप में देखते थे। सूफियों ने ईश्वर से सीधा संवाद बनाने के लिए संगीत और नृत्य का प्रयोग किया। सूफी संगीत की उत्पत्ति भारतीय संस्कृति में दिल्ली सल्तनत के शासनकाल के दौरान हुई। दिल्ली सल्तनत के साथ-साथ मुगलों के शासन के दौरान, सांस्कृतिक पहलुओं का एक बड़ा आदान-प्रदान हुआ, जिसमें टप्पा, तराना और ठुमरी के अलावा कव्वाली और ख्याल जैसे संगीत संश्लेषण के नए रूप शामिल थे। विभिन्न सूफी सम्प्रदायों में प्रमुख चिश्ती सम्प्रदाय के ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती ने इस सम्प्रदाय की नींव भारत में रखी तथा अजमेर को आपने अपना केन्द्र स्थान बनाया। सूफियों की पद्धति लौकिक प्रेम को माध्यम बनाकर अलौकिक प्रेम की अभिव्यंजना करना रही है जो कि इस विचार धारा का रहस्यात्मक पहलू भी है। इस हेतु सूफियों ने स्थानीय भाषा तथा संस्कृति को अपनाकर अपने सिद्धान्तों का प्रतिपादन आम जन पर संगीत के माध्यम से किया। इस संबंध में अमीर खुसरो का नाम सबसे आगे है, जो फ़ारसी के साथ-साथ ब्रज भाषा में भी पारंगत थे और उन्होंने हिंदुस्तानी संगीत में बहुत योगदान दिया।

**हिंदुस्तानी संगीत में सूफी संतों का योगदान** ‘’सूफी संगीत सुनने में बहुत सुंदर है और हमारी अंतरतम भावनाओं को छूता है। जब इसे सुनते हैं तो इसकी सुंदरता में खोए बिना नहीं रह सकते, सूफी कलाकारों और उनके गीतों का ऐसा मंत्रमुग्ध कर देने वाला भाव होता है।“

हजरत निजामुद्दीन औलिया भारत के महान और प्रसिद्ध सूफी संत थे, जिन्हें 'महबूब-ए-इलाही' (ईश्वर का प्रिय) कहा जाता है। उन्होंने प्रेम, मानवता, और समानता का संदेश दिया तथा राजा-महाराजाओं के वैभव को ठुकराकर अपना पूरा जीवन गरीबों और जरूरतमंदों की सेवा में समर्पित कर

दिया।इसके अतिरिक्त अमीर खुसरो, संत बुल्ले शाह, शेख फरीद आदि महान सूफी संत हुए हैं। सूफियाना संगीत विचारधारा की एक सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उसका आधार सामंजस्य पर टिका है। प्रेम की ताकत से निराकार ईश्वर को प्राप्त करने की उनके अभिलाषा रही है संगीत एवं ईश्वर में आस्था का इतना सुंदर मिश्रण केवल सूफी संगीत में ही देखने को मिलता है। सूफियों के संगीत में मतवालापन है और उस मतवालेपन में से वह ईश्वर की प्राप्ति चाहते हैं। इस मतवालेपन में सुध बुध खोकर तालियां बजाकर गाते हैं एवं नृत्य करने लग जाते हैं। कुछ लोक कथा लोक कथाओं जैसे की लैला मजनू, हीर रांझा, सोनी महिवाल इत्यादि नायक नायिका के आधार पर भी उन्होंने ईश्वर प्रेम को दर्शाया है। सूफीवाद के चिश्ती स्कूल के एक संत हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया ने 11वीं शताब्दी में दिल्ली में अपने समागमों में संगीत का इस्तेमाल किया था। यह उनके भक्त अमीर खुसरो थे, जिन्होंने 13वीं शताब्दी में तुर्की, फारस, अरब और भारत के संगीत तत्वों और बोलों को मिलाकर एक नया कला रूप बनाया।

सिद्ध प्रसिद्ध संत बाबा शेख फरीद जो कि काले कपड़े पहनते थे और में बाहरी पहनावे से ज्यादा अंदरुनी सफाई और प्रभु की नजदीकी की ओर अधिक जोर देते थे।

फरीदा काल मेडे कपड़े काला मेड बेस गुन ही परया में फिर लोग कहे दसबेस।

आधुनिक सूफी संगीत को भारत में नुसरत फतेह अली खान और शंकर-शंभू जैसे कलाकारों ने आगे बढ़ाया, जो आधुनिक दुनिया में इस कला के सबसे प्रसिद्ध कलाकारों में से हैं। आधुनिक भारतीय संगीत उद्योग में सूफी संगीत ने एक तरह से पुनर्जागरण का अनुभव किया है। यह भारत में संगीत का एक बेहद लोकप्रिय रूप बन गया है और राहत फतेह अली खान, कैलाश खेर, आतिफ असलम और अन्य जैसे कलाकार इसमें शामिल हैं।

**सूफी संगीत की गायन शैलियां**

**कव्वाली** भारतीय उपमहाद्वीप में सूफी संगीत की अनूठी विशेषता कव्वाली है, जो सूफी संगीत की एक उप-शैली है जिसकी उत्पत्ति यहीं हुई। सूफी संगीत दुनिया के हर कोने में सुना जाता है और इसकी सार्वभौमिक अपील ने गैर-मुस्लिम दुनिया भर में प्रशंसकों को आकर्षित करने में मदद की है।सूफी वे मुसलमान हैं जो इस्लामी आस्था के आंतरिक पहलुओं से जुड़े हैं। वे धर्म के बाहरी अनुष्ठानों से परे, ईश्वर के व्यक्तिगत अनुभव की तलाश करते हैं। कव्वाली का नाम अरबी शब्द 'कौल' से लिया गया है जिसका अर्थ है उच्चारण, "कव्वाली गायन शैली के लिए प्रयोग होने वाले को कॉल कहते हैं। कॉल अरबी भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है कथन वचन बात प्रतिज्ञा प्रवचन या विशेष पंक्ति।" 2 संगीत के सूफी दर्शन में ज़िक्र-ए-ख़फ़ी (अपने दिल के भीतर या बिना आवाज़ के पाठ) और ज़िक्र-ए-जाली (ज़ोर से पाठ) शामिल हैं। सूफी संगीत के तीन स्तंभ हैं ज़मान (पथ), मक़ाम (लक्ष्य, या अल्लाह से निकटता), और रिक़वान (अभ्यास करने और खुद को समर्पित करने का कार्य)। पीर/ख़्वाजा के अधीन, सूफ़ी विभिन्न सिलसिलों में विभाजित थे, जिसमें खानकाह गतिविधि केंद्र था। सूफ़ियों ने अपने पीर/ख़्वाजा की आराधना में रहस्यमय परमानंद पैदा करने के लिए समा का आयोजन किया। भारत में, चिश्ती सिलसिले या सूफ़ी संगीत और अभ्यास का क्रम प्रमुख है। चिश्ती लेखकों द्वारा लिखे गए फ़ारसी और उर्दू ग्रंथों में *समा (सुनना)* शब्द का इस्तेमाल किया गया है और वर्तमान में, इस तरह के संगीत को आम तौर पर कव्वाली के रूप में जाना जाता है। अपनी खूबसूरत आवाज़ के साथ, मुख्य गायक जिसे "कव्वाल" कहा जाता है, हारमोनियम, तबला, सारंगी और ढोलक बजाने वाले सहायक गायकों और संगीतकारों की सहायता से समूह का मार्गदर्शन करता है।

कव्वाली का क्षेत्र विशेष रूप से आत्मा से जुड़ा हुआ है। नाथ सिंह की एक प्रसिद्ध कव्वाली के शेर कुछ इस प्रकार हैं-

" जीवन खत्म हुआ तो जीने का ढंग आया,

जब शम्मा बुझ गई तो महफिल में रंग आया,

गाड़ी निकल चुकी तो घर में चल मुसाफिर,

मायूस हाथ मलता वापस दे रंग आया.,

आयु ने नाथ सिंह जब हथियार फेक डाले, यमराज फौज लेकर करने को जंग आया।''3

समा का उद्देश्य ऐसी परिस्थितियाँ बनाना है जिसमें मानव आत्मा दिव्य प्रेम का अनुभव कर सके। पारलौकिक और आनंदित, संगीत श्रोता में ईश्वर के प्रति गहन प्रेम पैदा करता है। श्रोता भावुक हो जाता है और ईश्वर की भव्य उपस्थिति के बारे में जागरूक हो जाता है, उसकी भावनात्मक, मानसिक और कभी-कभी शारीरिक स्थिति थोड़ी देर के लिए बदल जाती है। संगीत ईश्वर से प्रार्थना करता है, पैगंबर मोहम्मद की प्रशंसा करता है, और महान संतों और सूफी गुरुओं के जीवन का जश्न मनाता है।

**कल्बाना** यह गाना हिंदी और अरबी शब्दों को मिलाकर बनता है इसमें अनेक ताली शामिल होती हैं इसके हर टुकड़े के साथ इसकी ताल भी बदल जाती है। इसी कारण कुछ विद्वान इसे ताल सागर भी कहते हैं परंतु यह आजकल प्रचार में बहुत ज्यादा नहीं है ।

**नक्श निगार, नक्श और गुल** यह शब्द फारसी के हैं जिस गाने में फारसी भाषा का केवल एक ही शेर हो उसको नक्श कहते हैं और जिसमें फारसी की रुबाई हो उसको नक्श व गुल कहते हैं। इसमें सिर्फ स्थाई और अंतर ही होता है। नक्श में मौसम का वर्णन होता है और नक्श निगार में बरसात का वर्णन होता है नक्श निगार का गायन ज्यादातर मल्हार अंग के रागों में किया जाता है।

**रंग** रंग के आविष्कारक अमीर खुसरो माने जाते हैं । इसमें स्थाई और अंतर दो भाग होते हैं इस गाने में शुरू और शब्दों में श्रद्धा एवं प्यार की कोमल भावनाएं सम्मिलित होती हैं । रंग का आविष्कार अमीर खुसरो ने निजामुद्दीन औलिया के लिए किया था। आज भी कोई सूफियाना महफिल रंग के बिना अधूरी मानी जाती है। रंग कव्वालियों के आयोजन की समाप्ति पर अमीर खुसरो जी को श्रद्धांजलि अर्पित करने के रूप में कुछ विशेष पद गए जाते हैं जिन्हें रंग कहते हैं रंग अधिकतर कव्वाली की महफिल की समाप्ति पर या किसी समारोह के अंत में गया जाता है। किसी मजार में चादर चढ़ाने के समय पर भी रंग गायन का आयोजन किया जाता है।

**बसीत** यह चतुरंग का ही एक भिन्न प्रकार है इसमें कई राज सम्मिलित होते हैं बासित के हर टुकड़े में अलग-अलग राग बंदिशें के रूप में होते हैं। बासित को राग सागर भी कहा जाता है।

**सावन के गीत** अमीर खुसरो ने अनेक सावन के गीतों की रचना भी की । सभी वर्ग के लोग उसको गाकर आनंद उठा सकते हैं यह गीत शब्दों में और स्वरों में बहुत आसान होते हैं और आम जनता आसानी से इनको गा सकती है। इन गीतों में अधिकतर तीन या चार स्वर्ण पर ही पूरा गाना समाप्त हो जाता है।

**धमाल** जो सूफियाना कलाम खड़े होकर एक दूसरे का हाथ पकड़ कर और गोलाकार बनाकर नृत्य करते हुए गए जाते हैं और उस गाने के साथ तबले या ढोलक बजाई जाती है उसे धमाल कहते है। धमाल गायन के साथ तबले पर जो ताल बजाई जाती है उसे भी धमाल ताल ही कहते हैं व साथ में किए जाने वाले नृत्य को भी धमाल ही कहा जाता है।

**मंडहा** मंडहा दिल्ली और उसके आसपास के क्षेत्र में प्रसिद्ध है । मंडहा के आविष्कारक अमीर खुसरो थे। औरतों के द्वारा यह गाना दुल्हन की विदाई पर गया जाता है। इस गाने के शब्द बहुत ही मार्मिक होते हैं इसके स्थाई और अंतर दो भाग होते हैं। इस गाने में दुल्हन के हृदय में उत्पन्न भावनाओं को व्यक्त किया जाता है जो की विदाई के समय वह अपने माता-पिता भाई-बहन और सखियों के लिए सोचती है। इस जीत के शब्द बहुत ही दर्दनाक होती हैं। यहां दुल्हन को सड़क और पति को परमेश्वर तथा माता-पिता भाई-बहन सखियों को सांसारिक रिश्ते नाते माना जाता है।

**काफी गायन शैली** काफी शब्द का उद्गम उर्दू भाषा के शब्द कैफियत से हुआ है काफी एक उर्दू भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है विनियस करने वाला आगे आगे चलने वाला। इस रचना का आरंभ पंजाबी भाषा में हुआ और इसका प्रचार भी पंजाबी भाषा पंजाबी भाषी सूफियों ने किया इसके पश्चात सफी खान का हो एवं मद्रास में भी इसका प्रचार होने लगा। काफी गायन के प्रचार में पटियाला और घराने का महत्वपूर्ण योगदान है। वडाली

बंधु बरकत बंधु गुलाम अली सूफी संगीत गायक इस गाने शैली को बड़े ही आकर्षक ढंग से गाते हैं डॉ शब्दाद अली के अनुसार काफी वह गई जाने वाली रचना है जो सूफियों द्वारा प्रयोग में लाई गई और इसकी रचना भी सूफियां द्वारा ही की गई है।

**मर्सिया** मर्सिया शब्द की उत्पत्ति अरबी भाषा से हुई है। किसी महान व्यक्ति के अंतिम संस्कार के समय उसके लिए प्रशंसा भरे शब्द का बोलना या उसकी याद में विलाप करना ही मर्सिया कहलाता है। भारत में मर्सिया के प्रचार में अमीर खुसरो का नाम प्रमुख है उन्होंने अनेक मर्सिया लिखें। मर्सिया गाने वालों को मर्सिया कव्वाल कहा जाता है।गुलज़ार साहब का लिखा मर्सिया-

क्या लिए जाते हो तुम कंधों पे यारों

इस जनाज़े में तो कोई भी नहीं है,

दर्द है कोई, न हसरत है, न ग़म है

मुस्कुराहत की अलामत है न कोई आह का नुक़्ता

और निगाहों की कोई तहरीर न आवाज़ का कतरा

क़ब्र में क्या दफ़्न करने जा रहे हो ?

सिर्फ़ मिट्टी है ये मिट्टी -

मिट्टी को मिट्टी में दफ़नाते हुए

रोते हो क्यों ?

निष्कर्ष यह है कि ईश्वरीय सत्ता का प्रेम के माध्यम से अनुभूति करने का सफल प्रयास सूफियों ने संगीत के माध्यम से ही किया। संगीत का कोई धर्म नहीं होता है जहां भी सच्चा स्वर होता है वहीं पर उच्च कोटि का संगीत बन जाता है और वह ईश्वर एवं धर्म से जुड़ने पर भक्ति का रूप ले लेता है। सूफी संतों ने भी अपनी रचना संगीत में कर उसको ईश्वर प्राप्ति का साधन बनाया। कोई भी धर्म हो मजहब हो उसको जोड़ने में संगीत हमेशा सफल रहा है इसीलिए इतने वर्षों के बाद भी आज भी सूफी संगीत अपने मूल रूप में ही पहचाना जाता है पीढ़ी दर पीढ़ी उसका विकास हो रहा है।

## संदर्भ ग्रंथ सूची

1-सूफी काव्य संग्रह परशुराम चतुर्वेदी हिंदी साहित्य सम्मेलन प्रयाग

2-संगीत कव्वाली अंक, बाल कृष्ण गर्ग, जनवरी-फरवरी 1970

3-संगीत कव्वाली अंक बालकृष्ण गर्ग जनवरी-फरवरी 1970

4- सूफी संगीत शैलीगत सौन्दर्य, डॉ. राकेश माथुर

5- सूफी परिचय और उनका काव्य-संगीत,अज़ीज़ुर्रहमान

6-सूफी संगीत : राग परंपरा के संदर्भ में — डॉ. सुनील गोस्वामी

## Cite the Article:

**वर्मा, डॉ शालिनी. (2026 सूफी संगीत.** Shiksha Samvad International Open Access Peer-Reviewed & Refereed Journal of Multidisciplinary Research, 4(1) 125-128, ISSN: 2584-0983 (Online), Volume 04, Issue 01, September-2026.
**DOI:** - https://doi.org/10.64880/shikshasamvad.v4i1.14

**Disclaimer/Publisher's Note:** The views, findings, and opinions expressed in this publication are solely those of the author(s). The publisher and editorial team are not responsible for any errors, claims, or consequences arising from the use of the published content.